(११) प्रभो आपकी अनुपम परिणति...

प्रभो! आपकी अनुपम परिणति, दीक्षा का जो किया विचार;
जगत जनों को भी मङ्गलमय, नमन करें हम बारम्बार।
भव भोगों को नश्वर जाना, शुद्धात्मा जाना सुखकार;
मोह शत्रु का नाश करेंगे, प्रगटेगा सुख अपरम्पार॥ 1॥

पहले से ही प्रभुवर तुमने, मिथ्यातम का किया विनाश;
हे दीक्षाग्राहक! वैरागी, चरितमोह को करो परास्त।

रत्नत्रय आभूषण धारे, जङ्गल में यह मङ्गल कार्य;
रागी जन को है अति दुष्कर किन्तु आपको है स्वीकार॥ 2॥

धन्य धन्य है मुक्ति पथिक! तुम सहज सौम्य मुद्राधारी;
लक्ष्योन्मुख है ज्ञान आपका, चारित्र पथ के अनुगामी।
बारह जय करके दिग्विजयी, सुख वांछक हो हे जगदीश॥ 3॥

इन्द्रिय अरु प्राणी संयम, धारण करके हो आदरणीय;
शुक्लध्यान में कर्मेंधन को, नष्ट करेगा केवलज्ञान।
जग को मुक्तिमार्ग बताओ, हे त्रिभुवन के गुरु महान॥ 4॥